



प्रेस विज्ञापित

योग भारत का प्राचीनतम ज्ञान है – अशोक कुमार कालिया
साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर
भारतीय साहित्य में योगदर्शन
पतंजलि योगसूत्र के विशेष संदर्भ में विषय पर परिसंवाद संपन्न

नई दिल्ली। 21 जून 2018। साहित्य अकादेमी द्वारा आज अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित परिसंवाद को संबोधित करते हुए संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. अशोक कुमार कालिया ने कहा कि योग भारतीय संस्कृति का प्राचीनतम ज्ञान है। भारत के इतिहास में हम जितना भी पीछे जाएँगे वहाँ योग अवश्य मिलेगा। योग हमारी पैतृक धरोहर है और इसकी सुरक्षा हमें इसी रूप में करनी चाहिए। उन्होंने योग की ऐतिहासिक एवं साहित्यिक उपस्थिति के आधार पर कहा कि सभी योग की पद्धतियों को पतंजलि ने नियमित किया, उन्हें सूत्रबद्ध किया। प्रो. अशोक कुमार कालिया ने तांत्रिक विद्याओं में भी योग की उपस्थिति के साक्ष्य प्रस्तुत किए।

विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन के प्रोफेसर अरुण रंजन मिश्र ने योग में ईश्वर के स्थान को लेकर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने विभिन्न संस्कृत ग्रंथों के आधार पर योग द्वारा आत्मा और परमात्मा के मिलन के बारे में विभिन्न तथ्य प्रस्तुत किए।

बैंगलोर से पधारी डॉ. सरस्वती हेगड़े ने योग का व्यावहारिक पक्ष प्रस्तुत करते हुए बताया कि आज के समय में योग की विशेष आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं और किशोरों पर पढ़ाई के बढ़ते दबाव को संतुलित करने के लिए योग को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमें अपनी चित्तवृत्ति पर नियंत्रण करना सीखना होगा, तभी हम मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ हो सकेंगे। उन्होंने उपस्थित श्रोताओं को योग की प्रायोगिक रूप से कुछ क्रियाओं का अभ्यास भी कराया।

कार्यक्रम के आरंभ में प्रो. अशोक कुमार कालिया, डॉ. सरस्वती हेगड़े तथा डॉ. अरुण रंजन मिश्र को अंगवस्त्र प्रदान कर क्रमशः विशेष कार्याधिकारी देवेन्द्र कुमार देवेश, 'इंडियन लिटरेचर' के अतिथि संपादक ए. जे. थॉमस तथा पुस्तकालयाध्यक्ष सुफियान अहमद ने स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी में संपादक अनुपम तिवारी ने किया। इस परिसंवाद में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

ह./—
(के. श्रीनिवासराव)